लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

केशवदास कृत रामचन्द्रिका

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

रामचंद्रिका

'रामचंद्रिका' केशवदास द्वारा रचित उनकी राम कथा पर आधारित एक ऐसी काव्य-कृति है जिसमें धार्मिकता और दार्शनिकता की बजाय अलंकार कौशल ही अधिक दिखाया गया है। इसमें रामकथा के अंशों का वर्णन उपलब्ध है।

केशवदास दास का जन्म 1555 ई० में और मृत्यु 1617 ई० के आसपास हुई थी। ओरछा-नरेश महाराज रामसिंह के भाई इंद्रजीत सिंह की सभा में इनका अपने पांडित्य के कारण अत्यधिक सम्मान था। 'रामचंद्रिका' की रचना काल संवत 1601 बताया जाता है। यह हिन्दी रामकथा-परंपरा के अंतर्गत एक विशिष्ट कृति है। यह प्रबंध-काव्य 39 प्रकाशों में विभाजित है। कवि ने छंद 'ऽ' से लेकर अनेक वर्णिक और मात्रिक छंदों के प्रयोग किए हैं। इसमें नख-शिख वर्णन तथा ऋतु-परिवर्तन दर्शनीय है। सीता के मुख वर्णन में रसात्मकता को नहीं बल्कि अलंकार कौशल को प्रमुखता मिली है। इसमें भक्ति-भावना कहीं नहीं है। यहां कवि के द्वारा आचार्यत्व और पाण्डित्य को प्रधानता मिली है। केशव की अलंकारप्रियता एवं शब्दचमत्कार की प्रवृत्ति इस कृति में स्पष्ट दिखायी देती है। भाषा की कठिनता के कारण ही उन्हें 'कठिन काव्य का प्रेत' कहा गया है।

रावण-अंगद संवाद का यह अंश द्रष्टव्य है-

'राम को कहा ? रिपु जीतहिं, कौन कबै रिपु जीत्यौ कहां।
बालि बली, छल सों, भृगुनन्दन गर्व हर्यो, द्विज दीन महा'।

दीन खुन्यो छिति छत्र हत्यो, बिन प्राणन हैहयराज कियो।
हैहय कौन? वहै बिसर्यो? जिन खेलत ही तोहि बाँध लियो।

निश्चयात्मक रूप से यह कहा जा सकता है कि 'रामचंद्रिका' केशवदास की अलंकार-कौशल से युक्त एक अद्वितीय कृति है जो उनकी अद्भुत प्रतिभा का परिचायक है।